1. आर्चीबाल्ड हिगिन के रोमांचक कारनामे

2. अर्थशास्त्र

3. अनुवादक–जॉन मर्फी

4. लेखक के विषय में– जीन पियरे पैटिट, सेवानिवृत्त होने के बावजूद वैज्ञानिक शोधों में कार्यरत हैं वे खगोल भौतिकी के वैज्ञानिक हैं तथा ब्रह्माण्ड के मूल व प्रकृति विषय में दक्षता रखते हैं। उन्होंने वेधशाला में 29 वर्ष बिताए और 32 पुस्तकों का लेखन किया। इनमें से अनेक पुस्तकें विश्व की आठ भाषाओं में अनुदित हो चुकी हैं।

5. इस कॉमिक बुक का फ्रेंच से अंग्रेजी में अनुवाद श्री 'यूवी मार्क एमेलाइन' ने किया फ्रांस–पेरिस
हिंदी अनुवादिका–रचना भोला 'यामिनी'

6. प्रस्तावना या प्रारंभ

7. बहुत समय पहले बोरडेरिया में

8. बेचारा लड़का सारा दिन बर्तन ही बनाता रहता

9. मालिक! काम हो गया

10. ठीक है, जब वे सूख जाएं तो इन्हें भट्ठी में लगा देना। जाओ पहले थोड़ी लकड़ी काट लाओ।

11. मुझे यह भट्टी और जमीन अपने पिता से मिली उन्हें अपने पिता से और इस तरह मेरे दादा को अपने पिता से

12. हमारा जिब्रू परिवार सदियों से बर्तन बनाता आ रहा है।

13. हम ये बर्तन बनाते हैं

14. भई! जरा आराम से खड़े रहो। मुझे माल लादने में मुश्किल हो रही है।

15. अरे! वो पुराने क्रोमिर आए हैं

16. अदला–बदली

17. अच्छा चलो! एक बर्तन के बदले में चार मछली दे दो।

18. नहीं छः!

19. वो लोग जरा दाम तय कर रहे हैं। तुम तो ठीक हो न!

20. लेकिन वो मछलियां मैंने ही उसके लिए पकड़ी थीं

21. .....और इस तरह उसने मुझे भूखा मरने के लिए छोड़ दिया पर मैं क्या करती। नदी क्रोमिर जाति की है और मैं एक तियुल हूं। नियम के अनुसार भगवान के/फल ने नदी उन्हें ही दी है।

22. हां! मैं जानता हूं क्योंकि बोरडेरिया में भी ऐसा ही है।

23. ये लो!

24. इसी तरह जीवन चलता रहा। बोरडेरियावासी अपने बनाए बर्तनों के बदले क्रोमिरों से मछलियां ले लेते। दक्षिणी पोलकों से मिले नमक के बदले वे उन्हें सुखाई हुई मछलियां देते.....

25. एक दिन.....

26. मूर्ख लड़के! तुम्हें क्रोमिरों के पास अकेले ही बर्तन लेकर जाना होगा लेकिन हो सकता है कि वे तुम्हें ठगने की कोशिश करें इसलिए मैं तुम्हें गिनती सिखाऊंगा।

27. क्या सिखाएंगे ....?

28. लेखा–जोखा

29. मैं तुम्हें ऊंगलियों का रहस्य सिखाने जा रहा हूं। बेवकूफ! क्या तुम अपने हाथ देख सकते हो ?हर हाथ में ऊंगलियां हैं और इन ऊंगलियों में पोर भी हैं?

30. अगर मुझे क्रोमिरों के धोखे का डर न होता तो मैं यह विधा तुम्हें कभी न सिखाता।

31. और मुझे धोखा खाना बिल्कुल पसंद नहीं है।

32. देखो, तुम अपने अंगूठे की मदद से इन पोरों को गिन सकते हो यह गिनती में बारह हैं यानि पूरे दर्जन। इन्हें तुम पेड़ के

तने पर लिख सकते हो।

33. यह राज किसी को मत बताना नहीं तो भगवान तुम्हें सजा देंगे और तुम्हें मुझे जवाब देना होगा।

34. ....और अगर मुझसे चालाकी की तो मैं तुम्हारी खाल उतरवा दूंगा।

35. मुद्रा का जन्म

36. तुम्हारा जिब्रू कहां है ?

37. वो नहीं आ सके। पांव-भूत ने उन पर हमला कर दिया है।

38. अच्छा! मछलियां कहां हैं ?

39. दक्षिणी पोलक आए थे। वे लोग युद्ध की तैयारी में थे इसलिए तकरीबन सब कुछ ले गए

40. बस, अब तो यही बची हैं

41. ....पर में क्या करूं?मैं इन बर्तनों को वापिस नहीं ले जा सकता

42. मेरे पास उससे भी कुछ बेहतर है। लोहे की इस छोटी सी वस्तु को देखो। इस एक के बदले में एक मछली ली जा सकती है।

43. मैं इन्हें देख सकता हूं पर अपने मालिक से क्या कहूंगा। वो मछलियों के बदले इतनी छोटी वस्तु नहीं लेगा।

44. आजकल यही लोहे की मछलियां चलन में हैं। दक्षिणी पोलक तो इनके बदले में भोजन भी खरीदते हैं। शिकारी इनसे बानों के नुकीले सिरे बनाते हैं। वैसे इसे पिघलाकर और भी बहुत सी चीजें बन सकती हैं।

45. माफ कीजिए, मैं इन पर विश्वास नहीं कर सकता। ये देखने में तो सुंदर हैं पर मेरी पिटाई का कारण बन सकते हैं।

46. फिर तुम अपने बर्तनों का हिसाब कैसे बनाओगे ?यह तरीका तुम्हारे जीवन को आसान बना देगा जैसे एक वस्तु-एक मछली

47. इस तरह तुमसे कोई गलती नहीं होगी। जब तुम उन्हें हार की तरह पिरो कर गले में पहन लोगे तो राह में खोने का डर भी नहीं रहेगा।

48. कुछ भूमध्यवर्ती गाँवों में भी काफी समय पहले यही होता था।

49. शुक्र है! यह कम से कम भार में तो हल्की हैं।

50. अच्छा! उस क्रोमिर ने तुम्हें यह सब दिया ?

51. जी! उसने यह भी कहा है कि इसका भी उतना ही मूल्य है। आसपास के इलाके में जाने से आपको इस सच्चाई का एहसास हो जाएगा।

52. याद रखो! अगर मुझसे झूठ बोला तो तुम्हारी खैर नहीं

53. अरे वाह! जिन नायकों ने मेरे बर्तन लेने से मना कर दिया था। वे तो लोहे की मछलियों के दीवाने हैं। बदले में मैं मांस और रोएंदार खाल लाया हूं।

54. उन्होंने मुझे पांव भूत से छुटकारा पाने की दवा भी दी।

55. हुं..... तो बढ़िया रहा

56. इस तरह वस्तुओं के आदान-प्रदान का तरीका खत्म हुआ। जिब्रू लोग मांस के बर्तनों के बदले शराब के लिए धातु के इन टुकड़ों का इस्तेमाल करने लगे। यह धातु के टुकड़े धन का ही एक रूप थे।

57. ये भार में भी बहुत हल्का था।

58. उपभोक्ता सभ्यता

59. मैंने फैसला कर लिया है। तुम्हें ढ़ेरों बर्तन बनाने होंगे ताकि उससे ताजी मछली की बजाए वो छोटी वस्तु ली जा सके। फिर मैं उनसे बहुत सारा मांस और दवा खरीदूंगा।

60. भई! इससे तुम्हें क्या फायदा हुआ! तुम्हें तो तिगुने बर्तन बनाने पड़े। जितनी जरूरत है उससे कहीं ज्यादा

61. हां..... मछली की हड्डी चूसने की बजाए मुझे मांस की हड्डी मिलेगी। बस..... और क्या!

62. हे भगवान! यह बोझ तो दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

63. ये क्या! धातु की इस छोटी सी मछली पर क्या खुदा है ?

64. अच्छा! तुमने इसके बारे में नहीं सुना

65. दक्षिणी पोलक बिना किसी वजह के लड़ते रहते थे। इस तरह उन्होंने राजा न्यूमिस को नाराज कर दिया। राजा ने उनके राज्य पर कब्जा कर लिया और सबको सूली पर लटकाने का हुक्म सुना दिया। धातु की छोटी मछलियों ने उसका दिल जीत लिया। अब धातु की सारी खानें उसके कब्जे में हैं और वो हर टुकड़े पर अपना नाम व मुहर खुदवा रहा है।

66. जो कोई भी सूली पर लटकने से रह गया बस उसका एक सुराग देना ही काफी होगा।

67. ओह.....

68. धन की पूर्ति

69. न्यूमिस के दरबार में

70. पोलकों की खोज 'धन' तो सचमुच कमाल की है। इससे तो हम पूरी दुनिया खरीद सकते हैं।

71. पूरी, दुनिया ही क्यों, हम पूरा ब्रह्माण्ड खरीद सकते हैं।

72. तुमने बिल्कुल ठीक कहा, चलो ऐसा ही करें।

73. सोफिया! हमारा धंधा जोरों पर है। मुझे राजा न्यूमिस से बहुत सारे आर्डर मिले हैं। उसने सभी धरतीवासियों को अपने यहां खाने पर बुलाया है उसे भारी मात्रा में सुखाई हुई मछलियां चाहिए।

74. हमें मछलियां पकड़ने का काम तेजी से करना होगा। अगर तुम एक बड़ा सा जाल बुन सको जिसे हमें मछलियां पकड़ने में आसानी होगी।

75. वाह! मेरा प्यारा धन।

76. .....और आर्चीबाल्ड को बोरडेरिया के जिब्रू के लिए भारी संख्या में बर्तन बनाने पड़ते थे।

77. अरे यह तो ढ़ेर सारे हो गए।

78. .....पर वहीं दूसरी ओर, नायकों के बीच

79. तुम्हारे पांव-भूत के लिए दो सौ लीटर दवाई, और क्या?

80. मैं इसका मोल चुका सकता हूं। मेरे पास धन है।

81. वैसे भी यह तो लोहा है, केवल लोहा

82. ज्यादा जोर देते हो तो एक लीटर के लिए चार हाथ टुकड़े देनें होंगे

83. अगर तुम्हारा मतलब उन बानों के सिरों से है तो अब उनकी जरूरत नहीं रही हमारे तरकश बानों से भरे पड़े हैं।

84. अच्छा! जाओ राल और मुर्गी के पंख लेकर आओ।

85. तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते। पहले एक लीटर के लिए एक टुकड़ा लेते थे तुम्हें वही दाम रखना पड़ेगा।

86. क्या हुआ! मालिक

87. वो नायक..... उन्हें अब लोहे की मछलियां नहीं चाहिए।

88. और वो सब बढ़ता ही चला गया।

89. ये लो अपने सड़े हुए बर्तन मुझे तो असली मछली चाहिए।

90. अगर ज्यादा जोर देते हो तो तुम्हें मुझे एक बर्तन के लिए चार हाथ टुकड़े देने होंगे।

91. चार हाथ?क्या तुम पागल हो गए हो।

92. थोड़ी ही देर में।

93. राजा ने तुम्हें बुलाया है।

94. अपने राजा से कहो।

95. तुमने सैनिकों से क्या कहा। एक मछली के लिए टुकड़ों के चार हाथ!!

96. इसे सूली पर लटकाओ।

97. महाराज शांत रहें! गुस्से से बात नहीं बनेगी।

98. आईए, मैं आपको समझाने की कोशिश करता हूं कि आखिर हुआ क्या था।

99. दक्षिणी पोलकों ने इस धन की खोज की। यह व्यावहारिक भी था लेकिन अब भी कुछ बातें और बस में नहीं।

100. हम उन्हें ही इस समस्या का हल निकालने को कह सकते हैं

101. बदकिस्मती से वे सब मारे जाच चुके हैं।

102. ओह! बेचारे

103. जब हमने यह धन जारी किया तो एक मछली की कीमत एक लोहे का टुकड़ा थी। हमने ज्यादा लालच किया और कीमतें काबू से बाहर हो गईं।

104. हमें जल्द ही टुकड़े बनाने बंद करने होंगे।

105. पर उधर क्रोमिरों के लिए भी राजा न्यूमिस के आर्डर ने नई मुसीबत खड़ी कर दी थी।

106. अच्छा तो तुम इतनी सी मछलियां पकड़ कर लाई हो।

107. गुस्सा करना बेकार है। तुमने अपने लालच के कारण झील खाली कर दी।

108. मछलियों की संख्या घटती जा रही है। अपने नुकसान की भरपाई के लिए मुझे कीमत दुगनी करनी होगी।

109. एक मछली की कीमत टुकड़ों के आठ हाथ

110. क्या! एक मछली के लिए टुकड़ों के आठ हाथ तुम्हारी मछली मंहगी होती जा रही है।

111. जिसकी कमी हो वह कीमती होता है।

112. क्या आपने देखा महाराज! मछली की कीमत इतनी तेजी से बढ़ रही है लगता है इसकी कमी हो रही है। कमी से कीमत बढ़ती है।

113. हमने मुद्रा नहीं चुनी। लोहा तो आम धातु है जिससे लोग वस्तुएं बनाते हैं। धातु विज्ञान तेजी से पनप रहा है। हमें किसी ऐसी धातु की मुद्रा बनानी होगी जो दुर्लभ हो।

114. तुम क्या सलाह देते हो?

115. सोना

116. बिल्कुल ठीक। सोना पैदा करना मुश्किल है इसलिए इसकी मात्रा काबू में रहेगी।

117. यह खराब भी नहीं होता।

118. मुझे एक ही बात परेशान कर रही है। इस सोने का हम कोई इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे क्योंकि यह एक नरम धातु है।

119. इससे कुछ बनाना जरूरी नहीं है।

120. मैं नहीं जानता..... लोहा पिघला सकते हैं इनसे कई काम की वस्तुएं बन सकती हैं जैसे बानों के नुकीले सिरे, कीलें.....

121. और इस्तेमाल होने वाली कई चीजें

122. वैसे..... मैंने सोने के इस्तेमाल का तरीका भी खोज लिया है।

123. क्या?

124. इससे मुद्रा बनाओ।

125. इस तरह देश में मुद्रा संबंधी स्थिरता आ गई। लोग धन को बचत के रूप में भी रखने लगे।

126. इस तरह वाणिज्य का विकास हुआ। बोरडेरिया के जिब्रू ने नायकों को अपने बर्तन खरीदने के लिए राजी कर लिया जिससे उन्हें एक नया बाजार मिला।

127. नायकों के राजा को भोग-विलास का मजा मिला। उसने शिकार किए गए मांस के बदले बहुत सी अच्छी चीजें बटोर लीं।

128. बैंक

129. अपनी मुद्रा की बचत व चोरी-चकारी से सुरक्षा के लिए उन्होंने उसे एक ऐसे व्यक्ति के पास रखना शुरू किया जो थोड़ी सी फीस के बदले उनका धन सुरक्षित रखता था।

130. मांग के कारण मुद्रास्फीति

131. ध्यान से सुनिए! आप में से जो लोग नंगे सिर घूमते हैं उन्हें बुरी आत्माओं, नकारात्मक किरणों व सूर्य की किरणों से बचाव के लिए बोरडेरिया का बना टोप पहनना चाहिए।

132. यहां सिर के टोप बिकते हैं

133. हूं! जिब्रू जानता है कि विज्ञापन किसे कहते हैं

134. क्या, तुम नहीं सोचते कि तुम.....

135. अच्छा छोड़ो भी

136. स्कूल में जाकर अपना समय न गंवाए हमारा यह टोप आपको बिना पढ़ाई-लिखाई के विद्वान बना सकता है।

137. आर्चीबाल्ड को देखिए। इस अनपढ़ ने भी इसी टोप की मदद से ऊंगलियों में छिपा राज जान लिया।

138. प्यारे आर्चीबाल्ड! हमारा धंधा तो जोरों पर है।

139. भाई! पचास गुलबार लगेंगे।

140. मालिक बस तीन ही बचे हैं।

141. हूं, अच्छा साठ गुलबार दे दो।

142. पर आपने तो दाम बढ़ा दिए

143. यह सब तो भगवान की मर्जी है लोगों की मांग ने ही कीमत बढ़ाई है

144. हमने बर्तन बनाने के लिए लकड़ी पाने के चक्कर में जंगलों का सफाया कर दिया

145. मुद्रा स्फीति के कारण कीमतें

146. आर्चीबाल्ड! मैंने इस बारे में सब पता कर लिया है हम अपने बर्तन इस अलकतरे के तेल से पकाएँगे।

147. छि: कैसी बदबू है।

148. चुपचाप काम करो कोई चिंता मत करो।

149. कुछ ही समय बाद.....

150. क्या! एक पीपे की कीमत तीस गुलबार! तुम मेरी जान लेकर की रहोगे।

151. अगर तुम्हें यह नहीं जंचता तो मजे से लकड़ी जलाओ।

152. ईंधन

153. सिर का टोप

154. मालिक! उन्होंने कीमतें बढ़ा दी हैं

155. मुझे परेशान मत करो। मैं काम कर रहा हूं। अगर उन्होंने दाम बढ़ा दिए हैं तो तुम भी बढ़ा दो।

156. एक दिन....

157. मालिक! ऐसा कब तक चलेगा। सर्दियों में मुझे ठंड लगती है। हर रोज मैं भूखा रह जाता हूं। ऐसा पिछले कई सालों से चलता आ रहा है और आप एक मोटे सूअर की तरह बैठे-बैठे खाना भकोसते रहते हैं।

158. क्या.....

159. मुझे सब पता है। झील पर काम करने वाली लड़की ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है।

160. शायद उन लोगों ने 'कोऑपरेटिव' जैसा भी कुछ खोल रखा है।

161. मुझे प्रतिदिन पांच गुलबार चाहिए।

162. और हर सप्ताह एक दिन की छुट्टी।

163. प्रतिदिन पांच गुलबार! क्यों मेरी जान के पीछे पड़े हो?

164.(क) तुम तो मुझे बरबाद कर दोगे।

(ख) सुनो! अगर तुम कड़ी मेहनत करोगे तो मैं तुमसे अच्छी तरह पेश आऊंगा।

165. क्या तुम धंधा चौपट करना चाहते हो?अब मुझे अलकतरे के तेल की कीमत भी चुकानी पड़ती है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

166. आप बस इतना करें कि वो दवा..... जरा कम हो!
167. पांच गुलबार प्रतिदिन
168. हे भगवान! ये सब क्या हो रहा है।
169. जी नहीं पांच गुलबार अभी
170. पर इतने पैसों से तुम क्या करोगे?
171. मैं अपने लिए एक कमीज और साबुन खरीदूंगा।
172. अच्छा, पहले मौज-मस्ती और फिर लंपटता शुरू होगी
173. मेरा दिमाग मत घुमाओ। मैं अपने लिए एक कमीज लेना चाहता हूं
174. मुझे भगवान के सामने तुम्हारी जवाबदेही कहनी होगी।
175. मुझे तुम्हें तुम्हीं से बचाना होगा।
176. ठीक है! आज से अपने बर्तन खुद ही बनाओ
177. वो कितना एहसान फरामोश निकला। मैं उसे बरसों से खिलाता आ रहा हूं.....
178. अरे..... मेरी दवा
179. अगले दिन सुबह
180. आर्चीबाल्ड! जल्दी नीचे आओ तुम्हें ग्राहकों के लिए कुछ टोप बनाने होंगे। वे लोग कल लेने आ रहे हैं
181. मुझे हर रोज पांच गुलबार और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी चाहिए।
182. पर मैं इस बारे में बात नहीं कर रहा। तुम जल्दी नीचे उतरो
183. पांच गुलबार
184. हे भगवान! मैं अपने ग्राहक गंवा दूँगा।
185. एक गुलबार
186. नहीं पांच
187. और एक दिन की छुट्टी
188. अच्छा! मान लिया
189. मुझे इसका वेतन निकालने के लिए दाम बढ़ाने होंगे
190. प्रतियोगिता
191. आर्चीबाल्ड! इन लोगों को क्या हुआ?
192. मैं नहीं जानता
193. हां जी! देखिए यह टोप, यह आपको हर चीज से बचाएगा।
194. क्या हम इसे पहनकर देख सकते हैं?
195. हां-हां, क्यों नहीं
196. जरा देखें इसमें कितनी जान है।
197. हैं!!
198. फट्‌ाक!
199. बकवास
200. बिल्कुल बेकार है
201. क्या यह बकवास है?पर पीने के काम तो आएगा
202. नहीं, वहां भी काम नहीं आएगा
203. इनमें पीने का मजा ही अलग है
204. क्या?
205. देखो! आर्चीबाल्ड! यह लोहे के टोप और पीपे..... तुम्हें नहीं लगता कि हम बरबाद हो गए।

206. इस तकनीकी खोज ने कुछ ही समय में बोरडेरिया के जिब्रु का व्यापार तबाह कर दिया।

207. रोजगार बाजार

208. यह क्या! तुम तो एक कुम्हार हो, हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। क्या तुम गिन सकते हो?

209. यह गिनती तो बारह पर आधारित है पर हम लोग दशमलव पद्धति का इस्तेमाल करते हैं।

210. हम इस तकनीकी दुनिया में पिछड़ गए हैं

211. आर्चीबाल्ड बेरोजगारी के दौर से गुजर रहा था। उधर झील के किनारे पर सो किया.....

212. माटावोसका। हमने क्रोमिरों को मारकर झील पर कब्जा कर लिया। पर अब क्या हुआ।

213. हम मछुआरों को सारा काम करना पड़ता था पर थोड़े ही समय में हमारा खून चूसने वाले पैदा हो गए और हालात बदल नहीं पाए।

214. हमारा साथ तो लाजवाब रहा।

215. कामरेड! आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। यहां आप पैदावार के लिए काम कर रहे हैं परंतु दूसरे लोग राजनीतिक चेतना जगाने में जुटे हैं। हम सब एक नियोचित अर्थनीति में जी रहे हैं।

216. हां, बिल्कुल ठीक! जरा आओ और राजनीतिक नेताओं पर एक नजर डालो।

217. वे लोग खा-पी कर मजे से सो रहे हैं

218. वे लोग खा नहीं रहे। भोजन की गुणवत्ता जांच रहे हैं। तुम्हें गलतफहमी है।

219. हां! वो तो मैं देख ही रही हूं

220. सिर्फ एक आदमी काम पर है बाकी नौ सो रहे हैं या कुछ नहीं कर रहे

221.(क) हम सब अच्छी तरह मिलकर रह सकते हैं। यहां कोई बेरोजगार नहीं, सबके लिए काम है

221.(ख) हां! इस तरह यहां कोई अमीर भी नहीं होगा

222. सोफिया! जरा सावधान रहो। वह आदमी खतरनाक हो सकता है

223. जहां पैदावार, वेतन, कीमत व खपत आदि सब कुछ राज्य के अधीन होता है।

224. यह सब अच्छी तरह जानती हूं। भगवान जानता है कि मैं भी क्रांति चाहती हूं। जब हमने क्रोमिरों की हत्या की तो मैंने एक भी आंसू नहीं बहाया पर तुम्हारे इन निठल्ले और आलसी लोगों की राजनीतिक सूझ-बूझ क्या रंग लाएगी?इन्हें हमेशा लाभ में क्यों रखा जाता है?क्या केवल सुविधाओं पर इनका ही हक है?

225. तुम्हें इन छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर सोचना चाहिए

226. पहाड़ियों के उस पार बोरडेरिया में आदमी, आदमी का खून चूस रहा है

227. यहां यही सब थोड़ा अलग तरीके से हो रहा है।

228. बस बहुत हुआ! मैं तुम्हारी रिपोर्ट लिखने जा रहा हूं

229. हे प्रजापालक!

230. इधर राजा न्यूमिस के दरबार में

231. अच्छा! सोने की नई खदानों के क्या हाल-चाल हैं

232. महाराज! समाचार अच्छा नहीं है

233. हूं! हमें बहुत से धन की जरूरत है

234. मैं नहीं चाहता कि हमारे साथ भी वही सब हो जो पूर्वी क्रोमिरों के साथ हुआ।

235. हमें कुछ नए कर लागू करने होंगे। पतले लोगों पर या दाढ़ी वालों पर कर लगा दो

236. ऐसा होना मुमकिन नहीं है। लोग बगावत पर उतर आएंगे। अगर हमने सोने के टुकड़ों को और पतला किया जो उनमें से आर-पार दिखने लगेगा।

237. सुनो! तुम मेरे अर्थशास्त्री हो। तुम्हें मेरे लिए कोई ऐसा तरीका खोजना होगा जिससे वे जान भी न पाएं कि उनसे क्या ले लिया गया। जल्द ही कोई उपाय करो वरना जान से हाथ धो बैठोगे।

238. कोई ऐसा तरीका..... जिसे आसानी से कहा जा सके

239. अरे! एक आदमी को सजा के लिए ले जा रहे हैं। इसने जरूर कोई गंभीर अपराध किया होगा।

240. सैनिक! इसका अपराध क्या था?

241. पर्याप्त धनराशि न होने पर भी चैक लिखा था।

242. कुछ लोगों ने अपना सोना गुफाओं में सुरक्षित रख दिया और यह चलन से खत्म हो रहा है।

243. हां, यह बिल्कुल ठीक है।

244. लोगों ने तरीका खोजा है। वे एक कागज पर लिख देते हैं अमुक आदमी को इतने गुलबार दिए जाएं इन्हें चैक कहते हैं आप उनसे वस्तुओं का भुगतान कर सकते हैं अगर आपने अपर्याप्त धनराशि होने के बावजूद चैक लिखा जो उसे गैर-कानूनी माना जाता है।

245. यदि वे चाहें तो लोग उन्हें पर्वतों में ले जाकर उसके बदले में सोने की मुद्राएं दे देते हैं।

246. आह.....

247. धन्यवाद सैनिक! तुमने मुझे बहुत अच्छी तरह सारे हालात समझा दिए।

248. हे भगवान! मुझे जल्दी ही कुछ न सूझा तो मेरा भी यही हाल होगा।

249. ....हूं..

250. .....लेकिन

251. मुझे उपाय मिल गया

252. कागजी मुद्रा

253. महाराज! हम एक बैंक खोलेंगे जो 'बोरडेरिया बैंक' के नाम से जाना जाएगा।

254. इससे क्या फायदा होगा, बेकार ती उलझनें बढ़ जाएंगी

255. फिर हम चैक सिस्टम चलाएंगे

256. हम बैंक खोलकर प्रजा द्वारा एकत्र किया गया सारा धन वापिस दे सकते हैं। इसके बदले में हम उन्हें निश्चित धनराशि के वाऊचर देंगे। इस तरह सारा सोना हमारे पास आ जाएगा

257. पर इससे हम अमीर नहीं बन पाएंगे

258. शायद! अब मुझे तुम्हारी बात समझ आ रही है

259. हमारे सोने के पतले गुलबार तो दिखाई देते थे पर कौन जानता है कि हम कागजी मुद्रा भी चलाने वाले हैं

260. हम कागजी गुलबार भी चलाएँगे जो सोने के गुलबारों से ज्यादा कीमती होंगे।

261. बंदरों के लिए धन

262. शायद इतिहास में ऐसा पहली बार होगा कि पर्याप्त धन के बिना भी चैक दिए जाएंगे

263. क्या गड़बड़ है

264. क्या?

265. नहीं, कुछ नहीं महाराज!

266. सुनो, अगर हमने ज्यादा कागजी मुद्रा चलाई जो बेवकुफ लोगों को भी शक से सकता है अगर कागजी मुद्रा सोने के गुलबारों से ज्यादा हो गई तो भुगतान करना मुश्किल हो जाएगा

267. मैं उन्हें बदलने से मना कर सकता हूं

268. महाराज! इससे तो गड़बड़ हो सकती है। लोगों का कागजी मुद्रा से विश्वास उठ जाएगा।

269. अगर हम सोने के गुलबारों से दुगनी कागजी मुद्रा चलाएंगे तो हमें दो के बदले एक ही लौटाना होगा।

270. मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो पाएगा।

271. मैं जानता हूं कि हमें क्या करना है। हमें लोगों से जो सोना मिलेगा उसे हम गला देंगे।

272. हां पर इससे हमें क्या मिलेगा?

273. सोना, ढ़ेर सा सोना

274. इस तरह राज्य के इतिहास में पहली बार अप्रभावी चैक जारी किए गए। सब कुछ योजना के अनुसार हुआ। लोग अपने सोने के सिक्के लाते जिन्हें उसी समय गला दिया जाता। राजा न्यूमिस ने टनों नोट छाप दिए। जिनसे लोग माल खरीदने-बेचने लगे। जिससे कीमतें बढ़ी, सोने की कीमत भी बढ़ीं परंतु जैसे-जैसे सारी चीजें मंहगी होती गईं लोग पुरानी बोरडेरियन मुद्रा को भूल गए।

275. ऐसा कोई भी काम किसी भी बोरडेरियावासी को फांसी के तख्ते तक पहुंचाने के लिए काफी था। इसने अर्थनीति को नए मायने

दिए।

276. .....और सही मायने में न्यूमिस ने अपनी अर्थनीति लागू की।

277. इससे पूर्व, लोगों से धन वसूलने के लिए भारी कर लगाए जाते थे।

278. ऊह

279. एक पुराना भद्दा तरीका

280. न्यूमिस ने भी कर लागू किए पर उसे कभी कागजी मुद्रा की कमी नहीं हुई। हां कीमतें बढ़ती चली गईं।

281. बोरडेरिया में औद्योगिक युग आया। कई स्थानों पर कारखाने खोले गए। जहां लोग वेतन के बदले काम करते थे। इनमें से अधिकतर कारखाने न्यूमिस या उसके परिवर वालों के थे जिन्हें कागजी मुद्रा के बल पर खोला गया था।

282. दामों में तेजी आई तो कर्मचारियों को लगने लगा कि उनकी मजदूरी व वेतन बढ़ाया जाए। कई बार वे लोग बगावत पर भी उतर आते थे।

283. 100 गुलबार से कम मजदूरी नहीं लेंगे।

284. अत्याचारी राजा को मार दो।

285. छनाक

286. छापने की मशीन और स्याही जल्दी लाओ

287. इससे लोगों को एक बार तो ऐसा लगा कि वे अमीर हो गए

288. वाह! हम उसके हिस्से से कुछ गुलबार पाने में सफल रहे।

289. हुर्रे! हमारी जीत हुई।

290. लोग खरीदारी के लिए दुकानों की तरफ भागे

291. दुकानदारों ने भी अपना लाभ बढ़ाने के लिए अपनी वस्तुओं के दाम बढ़ा दिए

292. अगर वे कुछ और खरीदना चाहें तो यह कुछ खास महंगा नहीं है।

293. याद रहे हमें कुली को भी बढ़ाकर मजदूरी देनी होगी।

294. जितना कुछ बदलता है उतना ही वैसा रह जाता है

295. मुझे आपकी बात समझ नहीं आई

296. दो सौ गुलबार! आज से दस साल पहले मैं पांच कमाता था

297. क्या तुमने यह कीमतें देखीं?

298. हम किस समय में जी रहे हैं

299. मैं हैरान हूं कि यह सब हमें कहां ले जाएगा

300. मैडम सोफिया

301. हर तरह की दवाईयां

302. सोफिया

303. आर्चीबाल्ड

304. तुम यहां क्या कर रही हो?

305. क्या तुम देख नहीं सकते, मैं अपने-आप में कितना बदलाव ला चुकी हूं

306. मैंने एक खास कोर्स किया है।

307. तुम इस बारे में कुछ उल्टा कहना चाहते हो?

308. तुम्हारा मतलब जादूगरी!

309. हां, कुछ ऐसा ही समझ लो

310. विज्ञान में बहुत से राज छिपे हैं

311. हुं.....

312. मैं नींद आने की दवाएं शक्ति बढ़ाने वाली दवाएं, दर्द निवारक दवाएं और सपने बेचती हूं

313. क्या ये सचमुच कम आते हैं?

314. मैं कोई शिकायत नहीं कर रही पर अकाल के दौरान मैंने छः सौ हजार गुलबार कमाए

315. बाप रे! इतनी बड़ी रकम

316. तुम इन सब में विश्वास रखती हो?

317. तुम जैसा भी जानते हो, उसी तरह जीना पड़ता है।

318. अमीर हो या गरीब! फर्क तभी तक है जब तक आपके पास धन है

आह-आह-आह

319. इस बुरी दुनिया में केवल एक चीज ऐसी है जो पैसे से भी ज्यादा अहमियत रखती है।

320. क्या तुम अंदाजा नहीं लगा सकते?

321. .....न.....नहीं

322. अरे-हां!!

323. और आखिर में

324. आओ कहानी के इस भाग से पर्दा हटा दें

325. अगले दिन सुबह

326. कुकडू कूं

327. ओह! मुझे बड़ी गहरी नींद आई

328. कुछ लोगों का दिल या टांगे कमजोर होती हैं पर

329. पर मेरा नाड़ी संस्थान कमजोर है

330. अब मुझे देखने दो कि उसने वो दवा कहां रख दी

331. आर्चीबाल्ड! मेरे लिए एक तेज चाय।

332. वहां कौन से पौधे पड़े हैं?

333. वे भविष्य बताने वाली पत्तियां हैं।

324. अरे! चाय

335. इनकी मदद से तुम भविष्य में जा सकते हो

336. हां! तब सूअर भी उड़ सकते हैं

337. यह पूरी तरह वैज्ञानिक है।

338. बेवकूफ

339. यहां क्या हो रहा है

340. अच्छा तो इसने क्या कहा है?

341. प्रसिद्ध रसायनशास्त्री

342. सोफिया?

343. मैं यहाँ हूं

344. हे भगवान! ये हम कहां आ गए?

345. हम तो कहीं नहीं गए पर मूर्ख आर्चीबाल्ड ने चाय और भविष्य में ले जाने वाली पत्तियां मिला दी अब तो बहुत से युग बदल गए हैं

346. अरे वाह! यह सारी मशीनें तो देखो

347. क्या! तुमने इससे पहले कभी इकोनॉमिक मशीन नहीं देखी?

348. पर.....यह कौन बोल रहा है?

349. मैं हूं, डॉक्टर टारिसियस मैं एक अर्थशास्त्री हूं

350. अच्छा! तो तुमने ही इस मशीन की खोज की

351. जी नहीं, मेरे लिए इसके बारे में जानना ही काफी है।

352. ये सब पाइप किसलिए हैं?

353. वे सब इक्नोमिक सर्किट हैं

354. उत्पादन (पैदावार)

355. खपत

356. पाइप के बीच में अर्थशास्त्र द्रव्य 'लौली' दो आर्किमडीज पंपों के सहारे आगे बढ़ता है। आगे की ओर जाने वाला पंप खपत तथा पीछे की ओर जाने वाला पैदावार कहलाता है।

357. 'लौली' दो ऐसे लाल पदार्थों का मिश्रण है जो आपस में नहीं मिलते। मिश्रण के बीच पाए जाने वाले बुलबुले इन्हें दबावयुक्त बना देते हैं।

358. खपत और पैदावार पम्प के बीच में

359. एक खिड़की आओ इससे अर्थशास्त्र के बारे में जानें

360. काम ग्रीक भाषा का शब्द

361. लौली डॉयनामिक का पहला नियम

362. उत्पादन

363. यदि दोनों पंप एक ही गति से घूमें तो इसका मललब है कि सब ठीक है

364. खपत

365. पर अगर खपत बढ़ेगी तो आर्थिक द्रव्य नीचे की ओर आएगा इरगोल (ERGOL) फैल नहीं सकता इसलिए वे बुलबुले आकार में बढ़ जाएंगे और 'लौली' का घनत्व नीचे गिर जाएगा।

366. आप जानते हैं डॉ टिरेसियस 'लौली' के घनत्व में इस बिंदु को देखकर मुझे कीमतों के विस्फोट के कारण होने वाला धन का क्षय याद आ रहा है।

367. बिल्कुल ठीक!

368. उत्पादन पंप की गति 'पूर्ति' और खपत पंप की गति 'माँग' से तय होती है

369. अगर वे संतुलित रहें या एक साथ घटे-बड़े तो लौली का घनत्व एक सा रहता है और कीमतें स्थिर रहती हैं

370. अगर खपत बढ़ती चले जाए और उत्पादन के स्तर में बदलाव न आए तो लौली का घनत्व घटता है और कीमतें बढ़ जाती हैं।

371. उत्पादन

372. खपत

373. हां लेकिन

374. ऐसे हालात में लौली का घनत्व बढ़ता है और कीमतें गिर जाती हैं

375. अगर खपत बढ़ने की बजाए घट जाए तो क्या होता है?

376. अगर खपत बढ़े और उपज घट जाए तो कीमतें बढ़ती हैं उसी तरह जब उत्पादन ज्यादा हो तो कीमतों में गिरावट आ जाती है

377. इसलिए खपत और पैदावार तथा मांग और पूर्ति के आपसी संबंधों के अनुसार कीमतें अपने-आप ही तय होती रहती हैं।

378. प्रति सैकेंड इरगोल की कुछ मात्रा पैदावार पंप में जाती है। खपत पंप में भी ऐसा ही प्रवाह होता है।

379. खपत पंप के स्तर और इरगोल के प्रवाह का संबंध कीमत सूची कहलाता है।

380. आओ! इस मशीन को थोड़ा पास से देखें।

381. यह तो एक मोशन मशीन लगती है।

382. उत्पादन यंत्र

383. वेतन

384. कीमत सूची

385. खपत मोटर

386. टरबाइन डायनमो

387. वितरण सर्किट

388. खरीदने की शक्ति मापने का यंत्र

389. नहीं यह कोई मोशन मशीन नहीं लगती

390. मैंने भी तो यही कहा था

391. पाइपों में रगड़ होने से बिजली की तारें ठीक काम नहीं कर रहीं। यह तभी काम करती हैं जब इसे उर्जा मिलती है।

392. लौली डॉयनामिक का दूसरा नियम

393. लौलीडायनामिक्स का दूसरा नियम है एक इक्नोमिक मशीन अलग होकर नहीं रह सकती।

394. लोगों का वस्तुएं खरीदना, बेचना या बांटना ही काफी नहीं है। किसी न कसी रूप में कच्चे माल और उर्जा के इस्तेमाल से उत्पादन भी होनी चाहिए।

395. हां, ऐसा तो है ही

396. उत्पादक और गैर उत्पादक क्षेत्र

397. लॉली का कुछ भाग मजदूरी वाली टरबाईन में डाला जाता है ताकि खपत वाली डायनमो काम कर सके

398. उत्पादक यंत्र

399. उत्पादक क्षेत्र

400. सेवाएं

401. इनमें से कुछ सीधे उत्पादक यंत्र से जुड़े हैं और वेतन पर चलने वाले उत्पादक क्षेत्र चलाते हैं

402. लगता है लोगों को हर रोज इस पर अपनी नाक रगड़नी पड़ती होगी

403. यह सब तो बहुत अच्छे तरीके से काम करता होगा फिर परेशानी क्या है

404. उत्पादकता

405. यह उत्पादक यंत्र है यह सारी आर्थिक गतिविधियों का आधार है।

406. लेकिन इस आर्थिक क्रिया का माथा कैसे जाता है

407. वैसे आर्थिक गतिविधि आधे इरगोल (प्रवाहित गति)ः के बराबर होती है

408. इस तरह इस बल की गिनती की जाती है

409. आर्थिक दाब मापने की इकाई बार है

410. शायद मैं इसे बैरोमीटर से माप सकती हू।

411. एक गतिविधि बढ़ाने के लिए 'इरगोल' की राशि बढ़ा सकते हैं पर इसके साथ ही उत्पादकता बढ़ाना भी जरूरी है।

412. हा, बेहतर तो यही होगा कि पुरानी मशीन पर मेहनत करने की बजाए बड़ी आधुनिक व तकनीकी सुविधाओं से लैस मशीन इस्तेमाल की जाए।

413. एक बात मेरे लिए अब भी राज बनी हुई है। इक्नोमिक मशीन में डाली जाने वाली लौली की मात्रा कौन तय करता है?

414. विकास तथा मुद्रा की पूर्ति

415. किसी भी आर्थिक गतिवधि की वास्तविक अवस्था इसमें बहने वाला 'इरगोल' ही है। काम करने का बल और इरगोल के प्रवाह की गति ही लौली का घनत्व है। यदि हम इस मशीन में एक नई उत्पादन यूनिट लगा दें तो क्य होगा?

416. इस उत्पादक यंत्र के साथ इरगोल का पूरा टैंक जुड़ा रहता है ताकि कार्यबल बढ़ सके जिससे लौली का घनत्व बढ़े और कीमतें घट जाएं। कीमतों की स्थिरता बनाए रखने के लिए वे मुद्रा का थोड़ा भार बढ़ा देते होंगे।

417. दरअसल वे हर बार चोरी-चोरी कुछ बुलबुले डाल देते होंगे जिससे यह मजदूरी को बढ़ने ही न दे।

418. यह मान लेते हैं कि हम विकास के दौर से गुजर रहे हैं। मैक्स! तुम एक उत्पादक क्षेत्र के कर्मचारी और अल्बर्ट! तुम गैर उत्पादक क्षेत्र के कर्मचारी का अभिनय कर सकते हो।

419. गैर-उत्पादक क्षेत्र क्यों?

420. तुम सेवा व प्रशासन का प्रतिनिधित्व करो

421. इक्नोमिक मशीन में लगाया नया उत्पादक यंत्र अच्छी तरह काम कर रहा है

422. यह यूनिट लगाने से रोजगार मिला और बेरोजगारी घटी लेकिन मजदूरी के दावे बढ़ने लगे

423. हमें बहाव में इसी समय तेजी चाहिए

424. ठीक है! मैं धीरे-धीरे गति बढ़ाती हूँ

425. कीमतें अच्छा! इसे आराम से करते है।

426. गहनता बढ़ रही है। वितरण सर्किट में ज्यादा हानि नहीं हुई।

427. जैसे-जैसे उत्पादन पंप में इरगोल का बहाव बढ़ेगा, जीवन-स्तर भी ऊंचा उठेगा।

428. पर यह नई उत्पादन यूनिट अपने-आप नहीं बनी

429. नहीं! तुम ठीक कहते हो। उत्पादन को और आधुनिक व तकनीकी बनाने के लिए लौली के भीतरी बल का भाग इस्तेमाल किया गया

430. निवेश

431. हाजिर हूं

नवीन आधुनिकीकरण

432. नियमित रूप से प्रयत्न करने होंगे ताकि उत्पादन यंत्र पुराना न हो जाए

433. पूरी तरह हो गया

434. पाइप जाम हो रहे हैं

435. सर्किट भी खराब हो रहे हैं जिनसे हिसाब हो रहा है।

436. पूंजी, लाभ कर व बचतें

437. उत्पादन कीमत

438. सामाजिक शुल्क

439. अप्रत्यक्ष कर

440. मजदूरी

441. बचत

442. सेवाएं

443. आयकर

444. बचत

445. उत्पादक क्षेत्र

446. आयकर

447. कंपनी लाभकर

448. लाभ

449. लौली, अनेक वस्तुओं के भार से दब गया। 'इरगोल' एक टरबाईन को चलाता है जो जेनरेटर से जुड़ी है, यह उत्पादक पंप के प्रवाह को धीमा कर देती है। इस तरह उर्जा का कुछ भाग 'सामाजिक शुल्क' के सर्किट में चला जाता है। दूसरा भाग उत्पादन कीमतों में और बाकी श्रीमान लौलीमेकर के पांवों का पानी गर्म रखने के काम आता है।

450. यहां एक ओर श्रीमान लौलीमेकर हैं।

451. तथा दूसरी ओर 'सामाजिक शुल्क' सर्किट

452. सामाजिक सुरक्षा

453. पारिवारिक भत्ते

454. पेंशन

455. बेरोजगारी

456. एक बड़े से टैंक में लैलीमेकर अपनी लौली रखते हैं। इस तरह 'इरगोल' की उर्जा, पूंजी में बदलती है।

457.(क) पूंजी

457.(ख) कर के बाद हुए लाभ

458.(क) बचत

458.(ख) स्टेट बैंक क्रेडिट

459.(क) उधारी

निवेश

459.(ख) आधुनिक तकनीकों की ओर

460. पूंजी टैंक कर के बाद होने वाले लाभों व बचत से भरता है।

461. टैंक में भरी हुई लौली दो टरबाइनों में जाती है। एक मेरी नई आधुनिकीकरक मशीनों में और दूसरी व्यावसायिक ऋण में

462. दूसरी ओर वित्त के सिनिस्टर के पास भी ऐसा ही एक टैंक है जो करों से भरता है। इसमें लाभों पर कर, आयकर तथा अप्रत्यक्ष कर शामिल है।

463. सरकारी पेटी

464. उधार पर नियंत्रण

465. पूंजी

466. कर

467. सरकारी खर्च

468. छूट

469. बचत

470. लाभों पर कर

471. आय कर

472. अप्रत्यक्ष कर

473. सरकारी ऋण

474. दु:ख

475. यहां कुछ सरकारी खर्च भी हैं

476. सेना

477. शिक्षा-सर्वेक्षण

478. सामाजिक

479. शायद वह भी सरकारी है।

480. और बचत व उधार, कैसे काम करते हैं?

481. वैसे हमने देखा कि इक्नोमिक मशीन अस्थिर थी उत्पादन और खपत में कोई मेल नहीं बैठता था और प्रजा को कीमतों की तेजी झेलनी पड़ती थी

482. इसलिए मजदरों को अपनी लौली उनको टैकों में डालने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

483. पता नहीं तुम लोग आर्थिक विकास के इस दौर में आगे क्यों नहीं आ रहे हो?मैं तुम्हें एक खास मौका देना चाहता हूं। मेरी और तुम्हारी लौली मिलने से पूंजी अपने-आप ही बढ़ जाएगी।

484. पूंजी

485. यह जमाराशि हमें निवेश करने और इक्नोमिक मशीन को आधुनिक बनाने में सहायता करेगी

486. यहां कोई खतरा नहीं है। मैं आपको वार्षिक आय की गारंटी देता हूं। अपनी लौली का पूरा लाभ उठाएँ।

487. मजदूरी

488. बचत

489. सरकारी ऋण

490. बचत

491. सरकारी पेटी

492. यह जमाराशि हमें निवेश करने और इक्नोमिक मशीन को आधुनिक बनाने में सहायता करेगी

493. अपनी लौली को सुरक्षित स्थान पर रखें। अपने भविष्य की सोचें। अगर आपने लंबे समय के लिए हमारे पास धन जमा करवाया तो मैं वार्षिक आय के साथ-साथ कर मुक्ति की भी गारंटी देता हूं।

494. निजी बैंक, स्टॉक व शेयर

495. हूं

496. थोड़ी देर बाद

497. वैसे उसने हमें कुछ नहीं दिया पर थोड़ा फायदा तो हुआ ही।

498. तुम बहुत सीधे हो। आर्थिक गतिविधियां बढ़ी हैं। नई उत्पादन यूनिट बनी है पर उन्होंने मिश्रण में इतने बुलबुले मिला दिए कि लौली के घनत्व को घटने से रोका नहीं जा सकता और आखिर में नुकसान तुम्हें ही पहुंचता है।

499. क्या तुम सोचते हो कि जब हमारी बचत से 'इरगोल' की मात्रा बढ़ती है तो मिश्रण का घनत्व बढ़ने की बजाय घट जाता है।

500. बहाव दुगना होने से हमारी मजदूरी भी बढ़ी है।

501. लौलीमीटर

502. मजदूरी

503. जीवन स्तर

504. तुम क्या सोचते हो?

505. इन टरबाईनों में बस हवा है। लौली का घनत्व घट रहा है और जरा क्रयशक्ति को तो देखो

506. खपत पंप

507. वह कुछ ज्यादा नहीं बढ़ पाई है।

508. विकास लौली में नहीं बल्कि इसके 'इरगोल' में छिपा है। ऐसा ही जीवन-स्तर के साथ भी है, यहाँ भी मजदूरी नहीं क्रय शक्ति काम जाती है।

509. क्या लौली को हटाने का कोई दूसरा उपाय हो सकता है।

510. बढ़िया है, मुद्रास्फीति से बचने का एक ही उपाय है हम हर वस्तु को जमा दें।

511. इसका यही आकार बना रहे इसके लिए हमें इसे जमाना होगा।

512. पर इससे लौली अपना असर खो देगी क्योंकि पूंजी का जमाव होते ही इक्नोमिक मशीन जाम हो जाएगी।

513. देखो एक पाईप लाईन।

514. इक्नामिक मशीन का बॉयलर रेगिस्तान से आने वाले कीमती तरल पदार्थ से चलता है। इसे यहां तक लाने के लिए बहुत उर्जा की जरूरत पड़ती है।

515. अरे!

516. खपत पंप

517. आयात

518. बदले में, उत्पादन पंप उस लाईन को हमेशा भरता रहता है।

519. पैट्रोल की कमी

520. अरे, ये तो सिनिस्टर हैं!

521. जरा डाक देख ली जाए

522. हे भगवान!

523. हे भगवान! हे भगवान

524. उन्होंने दाम बढ़ा दिए

525. मेरे पैरों का पानी ठंडा हो रहा है

526. उत्पादक कीमतें

527. यह तो आम बात है। यह धारा उत्पादन कीमत लाईन में जा रही है।

528. सामाजिक शुल्क

529. देखो सारा प्रेशर गिर रहा है

530. ये सब क्या हो रहा है?

531. लौलीमीटर ने गैर उत्पादक लाभों वाली लाइनें बंद कर दी हैं।

532. बेरोजगारी बढ़ रही है

533. तुम क्या कर रही हो?

534. कीमतें बढ़ने से पहले खरीददारी कर लूं। मैं अपनी बचत उधार दे रही हूं।

535. और लौलीमेकर क्या कर रहे हैं?

536. इसका मतलब कि लौलीमेकर जाली मुद्रा बना रहा है।

537. वह हमारे पीछे से टैंक में थोड़ी हवा भरने की कोशिश कर रहे हैं

538. नहीं, लेकिन बैकिंग सिस्टम, सारे कागज वगैरह बेकार हैं। अगर हम किसी दिन लौलीमेकर का टैंक खाली करें तो हमें बड़ी हैरानी का सामना करना होगा

539. और विश्वास की कमी ने कीमतों को आसमान पर पहुंचा दिया है।

हमें क्रेडिट का ऐसा इस्तेमाल रोकना होगा

540. लौलीमेार लोगों को बहुत लौली उधार देता है जबकि उसे मैंने धन उधार दिया।

541. इस तरह हर व्यक्ति ने दूसरे को उधार दिया?

542. मुझे तो इस कर्जे का चक्कर ही बुरा लग रहा है

543. मैं इस उधार के चक्कर में फंसा हूं और उधर सरकारी खजाने तेजी से खाली हो रहे हैं।

544. हम क्या कर सकते हैं हम प्रयत्क्षव अप्रत्यक्ष और लाभों पर होने वाले टैक्स बढ़ा दें?

545. मैं उसका क्रेडिट घटाने जा रहा हूं इस तरह उसे उधार देने से पहले सोचना पड़ेगा

546. ओह, मेरे निवेश का क्या होगा?

547. या सारे टैक्स.....

548. हम उत्पादन में बढ़ोत्तरी चाहिए

549. श्रीमान सिनिस्टर! पाइपों में दबाव गिर रहा है और बैरोमीटर भी नीचे आ रहा है

550. देखो, टैंक बिल्कुल खाली है

551. ये अजीब सी वस्तु किसने लगाई?

552. इस तरह हम इसे मीलों दूर से देख सकते हैं

553. यह एक बड़ा बिजली का बल्ब है जो सरकारी खर्च से चलता है

554. इस जल्दी उतारो वरना हम मारे जाएंगे

555. बहाव बढ़ाओ वरना हम काम हीं करेंगे

556. हां, हां, अभी तो

557. हूं! अब तो एक ही तरीका बचा है।

558. सिनिस्टर क्या कर रहा है?

559. वह इन बड़े टैंकों को लौली सर्किट से जोड़ रहा है।

560. और सरकारी खजाने भर रहा है।

561. यह तो विशाल खजाने हैं परंतु इनमें भरा क्या है?

562. मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं है

563. शुक्र है, बहाव में तेजी आई

564. चलो उत्पादक पंप ने काम करना शुरू तो किया

565. अरे! सावधान हो जाओ और इन कीमतों पर ध्यान दो

566. खैर! मशीन ठीक चल रही है और पंप भी सही काम कर रह हैं

567. पर देखो क्रय मशीन घटती जा रही है।

568. यह सब सामान्य नहीं है। कड़ी मेहनत के बावजूद भी हमारे हाथ कुछ नहीं आ रहा

569. सिनिस्टर ने इस आर्थिक द्रव्य में क्या डाला?

570. आओ इन टैंकों को पास से देखें।

571. मजदूरी

572. दरवाजा!

573. चलो, अंदर चल कर देखें

574. खाली

575. तुम कहना चाहती हो कि ये टैंक खाली हो चुके हैं

576. नहीं, वे तो पहले से ही खाली थे

577. एक तरह की शून्य आर्थिक व्यवस्था

578. जब सब कुछ हाथ से निकल जाए तो सभी सिनिस्टर ऐसा ही करते हैं। वे सर्किट में हवा भर देते हैं जिससे लौली तेजी से काम करने लगती है।

579. पर लौली अपना घनत्व खो देती है

580. कीमतों में तेजी

581. बचत में कमी

582. पूंजी भी

583. हाय! मैं भी अपनी बचत गंवा बैठी

584. लौली में कर

585. पूंजी का लुटेरा, दुष्ट कहीं का

586. हम सही समय पर आए हैं।

587. लौलीमेकर मुझे तुम्हारी पूंजी चाहिए

588. बचपना मत करो

589. वो कहाँ गया

590. ओह! यह तो जम गया

591. वो एक चिट्ठी छोड़ गया है

592. मजदूरी रोको कंपनी के लाभों व सामाजिक शुल्कों पर कर घटाओ और हमें निवेश के लिए छूट दो मिस्टर लौलीमेकर

593. पर क्रय शक्ति गिर जाएगी। लोग शिकायत करेंगे और खपत पंप और भी धीमा चलने लगेगा

594. आओ हम इस झिलमिल करने पैट्रोल की बचत करें

595. लौली अब किसी काम की नहीं। बहाव जल्दी बढ़ाओ

596. हमने तो पहले ही कहा था

597. पागलपन

598. सब कुछ बरबाद

599. वैसे जब मैं सिनिस्टर था तो हालात इतने बुरे नहीं थे

600. उपसंहार या अंत में.....

601. देखा एक नया उत्पादक यूनिट

602. हमें और भी अपनाने होंगे

603. मंत्री

604. हां

605. क्या हो यदि मैं दूसरा मंत्रीमंडल बनाऊं या राज्य का कोई सैक्रेटरी
606. उपाय हमसे ज्यादा दूर नहीं हैं। हमें नए व आधुनिक उत्पादक यंत्रों की खोज करनी होगी
607. हमें अपना दिमाग लगाना होगा
608. हां-हां तुम ठीक कहते हो
609. राज्य कोष
610. हां.....
611. कुछ नहीं
612. कड़ाक
613. फुस्स
614. वाहनों में होने वाला रिसाव ही इस देश की सबसे बड़ी परेशानी है।